कोई भी परिवर्तन एक दिन में नहीं होता, उसे करने के लिए लगातार प्रयास की आवश्यकता होती है। सोचो, कभी ऐसा हुआ कि हमने प्रयास शुरू किया, वह बीच में ही अधूरा रह गया हो। ज़्यादातर यही हुआ है, क्योंकि शुरू से हमारी छोड़ने की नेचर बन सी गई है।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

मान लो हमने कोई कार्य अभी शुरू किया, उसे हमें 90 दिन में पूरा करना है, माना वह 90 दिन का एक प्रोजेक्ट है। उस प्रोजेक्ट को जब आप शुरू करेंगे तो उस दिन या कुछ दिनों तक जोश बना रहता है, लेकिन जैसे जैसे उद्देश्य में ढ़ीलापन आता है, हम सभी भी ढ़ीले होते चले जाते हैं। कारण क्या होगा इसके पीछे? क्या प्रोजेक्ट में कोई गड़बड़ी है? या बनाने वाला ठीक नहीं है, या फिर हम ठीक नहीं हैं। तीनों को अगर हम किनारे कर भी दें तो उससे क्या होगा? हम अपने को थोड़ी देर के लिए छुड़ा भी दें, लेकिन मन का क्या, वह तो आपको खाता ही रहेगा। अरे, बड़े आये थे नया प्रोजेक्ट बनाने वाले! जो आपका मन आपसे बोलता रहता है।

ये तो होता ही है, लेकिन निरंतर प्रयास के लिए हमें क्या करना चाहिए... उस पर विचार करते हैं। सबसे पहले जो उद्देश्य आपने करने का लिया उसे बार बार दोहराते जाओ या फिर उसे डेस्क बोर्ड पर लिखकर टांग दो, ताकि वो आपको बार बार याद दिलाता रहे, कि नहीं, हमें कुछ करना है, कुछ तो करना है। जितनी बार आप उस उद्देश्य को सामने देखते जायेंगे, उतने ही आप आगे बढ़ते जायेंगे। किस बात में आगे, कार्य करने की उत्सुक्ता और उमंग उत्साह लाने में आगे बढ़ेंगे। यह बात मज़ाक नहीं है, लेकिन उसे रोज़ करने में मुश्किल हमें अनुभव होता है। अरे यार, एक ही चीज़ को हम कितने दिन देखें। यह भी तो मन नहीं करता ना! इसलिए आप सोचो, जब आप रोज़ उद्देश्य को देखने में सक्षम नहीं हैं तो वो आगे का प्रयास कैसे करेगा? कर सकेगा क्या? नहीं ना! हो नहीं सकता। इसीलिए सबसे आसान रास्ता यही है कि उसे बार बार (उद्देश्य को बार बार) अन्दर ले

जाना है।

अगर आपने यह बार बार कर लिया, वह छप जाये, आप वही उद्देश्य बन जायें, फिर देखो आपका मन और शरीर उसे किस तरह से फॉलो करते हैं! फॉलो तो करेंगे ही करेंगे। होना ही है ऐसा। बस अन्तर इस बात का है कि कुछ लोग ही इसमें शामिल होंगे। तो राजा भी तो थोड़े ही होंगे ना! आप इस पर एक बार कार्य करके तो देखें ना! आप देखिए ज़िंदगी छोटी नहीं होती, हम जीना ही देरी से शुरू करते हैं। जब तक कोई चीज़ या रास्ते समझ में आने लगते हैं तब तक लौटने का वक्त हो जाता है। यहीं से हमें समझ लेना है कि हमें कैसे आगे बढ़ना है। अरे आगे बढ़ो। लेकिन आगे बढ़ने के लिए एक चीज़ इतनी बार कर लेनी है कि वह आपकी हो जाए। अगर आप यह बार बार करो तो प्रयास बेकार नहीं जायेगा। सभी तो इन बातों को फॉलो नहीं करेंगे। लेकिन जो भी यह करेंगे, कम से कम उनके ज़हन में यह बात उतर जायेगी।

हमारा प्रयास सिर्फ उन लोगों के लिए होता है जो इसको करते हैं। ना करने वाले सिर्फ उसकी तारीफ करते हैं। मन की शक्ति उन कार्यों में लगती है जो लोगों ने किया हो, ना कि उन कामों में जिसे हमें करना है, अर्थात् हम अपना कम्फर्ट ज़ोन ढूंढ़ते हैं, ना कि खुद प्रयास करते हैं कि कुछ नया करूँ, या मैं भी कुछ सीखूं। तो अब उठो और लग जाओ कुछ करने में।

आइजोल-मिजोरम। राजयोगिनी ब्र.कु. सत्यवती दीदी के अमृत महोत्व पर दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् दीदी के साथ उपस्थित हैं राज्यपाल महोदय कुम्मनम राजशेखरन, ब्र.कु. राकेश तथा ब्र.कु. नर्मदा।

गांधीधाम-भारत नगर(गुज.)। नवरात्रि पर चैतन्य देवियों की झाँकी एवं आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझाने के पश्चात् मन्दिर के मुख्य ट्रस्टी श्यामसिंह राठोड़ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संगीता।

छत्तरपुर-म.प्र.। नवरात्रि पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा रामदेव नर्सिंग कॉलेज के पास आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी में ब्र.कु. मोनिका तथा ब्र.कु. कल्पना ने बताया नवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य।

राहुरी-महा.। नवरात्रि के अवसर पर आयोजित 'संगीत संध्या' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए राहुरी कृषि विद्यापीठ के वाइस चांसलर डॉ. के.पी. विश्वनाथ, ब्र.कु. नलिनी दीदी,मीरा सोसायटी, केसरबाई पतसंस्था के चेयरमैन सागर तानपुरे, ब्र.कु. नंदा तथा अन्य अतिथिगण।

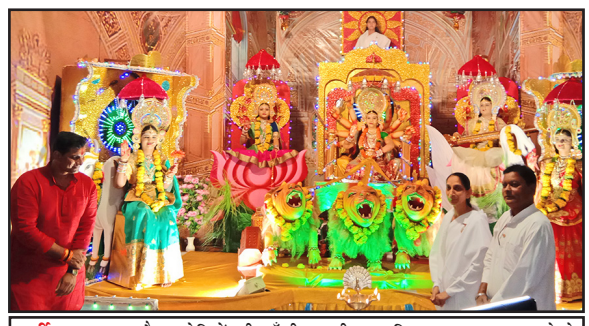

खुर्सीपार-छ.ग.। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करने के पश्चात् चित्र में महापौर देवेन्द्र यादव, ब्र.कु. नेहा तथा अन्य।

शिलॉन्ग-मेघालय। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सी.आर.पी.एफ.कैम्प,पोलो, शिलॉन्ग में राजयोग मेडिटेशन तथा ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात् समूह चित्र में सीनियर ऑफिसर्स तथा जवानों के साथ ब्रह्माकुमारी बहनें।

राजकोट-मेहुलनगर(गुज.)। नवरात्रि के पावन पर्व पर आयोजित झाँकी में चैतन्य देवियों के साथ ब्र.कु. चेतना तथा ब्र.कु. आवृति।

सीतापुर-उ.प्र.। डी.आई.जी. ज्ञानेश्वर तिवारी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. योगिनी।

हल्दवानी-उत्तराखण्ड। भारत रत्न पंडित गोविंद बल्लभ पंत के 131वें जन्म दिवस समारोह में ब्र.कु. वीना तथा ब्र.कु. नीलम को सम्मानित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष जिवन्ती भट्ट, पूर्व दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री शांति मेहरा, पूर्व सभासद दया बिस्ट तथा अन्य।

दिल्ली-मजलिस पार्क। इब्राहिमपुर केशवपुरम में वृक्षारोपण करते हुए ग्राम विकास समिति की चेयरपर्सन तथा निगम पार्षद श्रीमति निर्मला राणा, ब्र.कु. राजकुमारी, ब्र.कु. शारदा, ब्र.कु. सुष्मिता तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-3(2018-2019)

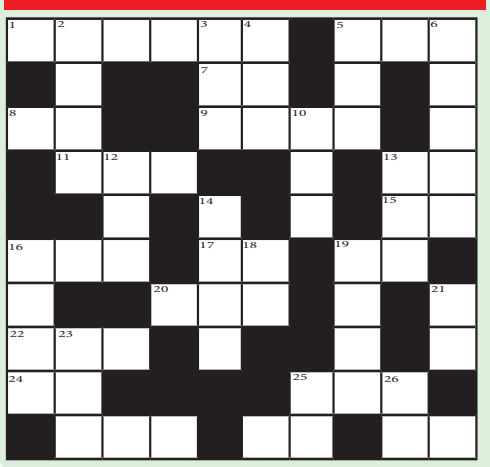

ऊपर से नीचे

2. चार युगों में से एक (4)
3. वचन, प्रतिज्ञा (3)
4. गीला, आर्द्र (2)
5. यह पढ़ाई मनुष्य से ...बनाती है, देव (3)
6. फायदेमंद, लाभ देने वाला (5)
10. भार, तौल (3)
12. परिधान, वस्त्र (3)
13. विष, गरल, हलाहल (3)
14. मार-पीट, लड़ाई (4)
16. माया ने बिल्कुल ही...बना दिया है (4)
18. निषेध, वर्जित, (2)
19. चलायमान, अस्थिरता (4)
21. तन-मन... से बाबा की सेवा में तत्पर रहना है, वित्त (2)
23. जपना, बार-बार कहना (3)
25. समय, अवधि (2)
26. संसार, जहान (2)

बायें से दायें

1. भाग्यशाली, नसीब वाला (5)
5. पूर्ण अभाव ग्रस्त, देवाला, ऋण चुकाने में असमर्थ (3)
7. मृत्यु के देवता, यमराज (2)
8. उम्र, जीवनकाल, (2)
9. राक्षसी प्रवृत्ति, आसुरीयता (4)
11. मिथ्या बात, बढ़ा-चढ़ा कर कही गई बात (3)
13. विजय, सफलता, फतेह (2)
15. अधिकार, वर्सा, (2)
16. निःसंदेह, निर्विवाद, (3)
17. त्रेतायुग के महाराजा, मर्यादा पुरूषोत्तम (2)
19. भय, खौफ, अंदेशा (2)
20. कमाई करना, उर्पाजन, पैदा करना (3)
22. ...तेरी गली में, मृत्यु (3)
24. तुरन्त, तत्काल, फुर्ती से (2)
25. कागद, स्याही बने समुन्दर चाहे जंगल बने कलम धरती बने दवात चाहे.... बने गगन (3)
27. कोमल, सुकुमार (3)
28. वर्ष, बरस, 12 मास का समय (2)
29. दुःख, तकलीफ, दर्द (2)